आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2465 • उदयपुर, गुरुवार 23 सितम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

चलने को आतुर लिंकन रानी

जब खुशियां द्वार पर दस्तक देती दिखाई दें और एकाएक वे काफूर होने लगे तो व्यक्ति अथवा परिवार पर क्या बीतेगी, उसकी कल्पना से ही मन सिहर उठता है। ओडिशा के ब्रह्मपुरगंजाम निवासी कानूस्वाय के परिवार के साथ ऐसा ही कुछ हुआ कि खुशियां आती दिखाई दी और जब वे आ गई तो गहरे तक पीड़ा दे गई। कानूस्वाय की पत्नी ने वर्ष 2018 में कस्बे के सरकारी अस्पताल में अपनी पहली संतान को जन्म दिया। माता–पिता और परिवार आने वाले बच्चे के लालन–पालन को लेकर छोटे–छोटे लेकिन रंगीन सपने सजा रहे थे। बच्ची के जन्म की खुशी तो मिली लेकिन अगले ही पल वह खुशी बिखर गई। जन्म लेने वाली बच्ची के दोनों पांव पेट से सटे थे। माता–पिता इस स्थिति में शोक और संशय में डूब गए। डॉक्टरों ने किसी तरह उन्हें दिलासा दिया कि बच्ची के पांव को वे सीधा करने की पूरी कोशिश करेंगे, हालांकि इसमें थोड़ा वक्त लगेगा। बच्ची को माता–पिता ने लिंकन रानी नाम दिया। इस तरह 8–9 महीने बीत गए। डॉक्टरों ने पांव तो लम्बे–सीधे कर दिए, लेकिन बच्ची अभी ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही थी। इसका कारण दोनों पांव के पंजों का आमने–सामने मुड़ा हुआ होना था। कुछ अस्पतालों में दिखाया भी पर कहीं भी संतोषजनक जवाब नहीं मिला। किसी बड़े अस्पताल का रुख करना उनकी गरीबी के चलते नामुमकिन था। वह दिन–रात मजदूरी कर जैसे–तैसे परिवार का पोषण कर रहा था। करीब 7–8 माह पूर्व उन्हीं के गांव का एक दिव्यांग नारायण सेवा संस्थान, उदयपूर में पांव का ऑपरेशन करवाकर आराम से चलता हुआ जब घर लौटा तो उसे देख कानू को भी अपनी बिटिया के लिए उम्मीद की एक किरण दिखाई दी। अप्रेल 2021 में माता–पिता लिंकन को लेकर संस्थान में आए, जहां उसके दांए पंजे का सफल ऑपरेशन हुआ और इस वर्ष 10 अगस्त को वह दूसरे पंजे और घुटने के ऑपरेशन के लिए आए, यह ऑपरेशन सफल रहा। पहले वाले पंजे के ठीक होने से माता–पिता को बाएं पांव के भी पूरी तरह ठीक होने की उम्मीद है तो लिंकन अन्य बच्चों की तरह चलने–दौड़ने को मचल रही है।

दीपक के जीवन में उजाला

घर में पहली संतान हुई, हर्ष का वातावरण था। किन्तु वह स्थायी नहीं रह पाया। बच्चे ने जन्म तो लिया, लेकिन शारीरिक विकृति के साथ। बाएं पांव में घुटने के नीचे वाले हिस्से में हड्डी थी ही नहीं। पांव मात्र मांस का लोथड़ा था।

राजस्थान के राजसमंद जिले की खमनोर तहसील के मचींद गांव निवासी किशनलाल की पत्नी राधाबाई ने उदयपुर के बड़े सरकारी अस्पताल में 2014 में पुत्र को जन्म दिया। डॉक्टरों ने शिशु की उक्त स्थिति को देखते हुए घुटने तक बायां पांव काटना जरूरी समझा। उन्होंने माता–पिता को बताया कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो बच्चे के शरीर में संक्रमण फैल सकता है।

माता–पिता ने दुःखी मन से जन्म के तीसरे ही दिन बच्चे का पांव काटने की स्वीकृति दी। मजदूरी करके परिवार चलाने वाले किशनलाल ने बताया कि करीब 2 माह बाद पांव का घाव सूखा और वे बच्चे को घर ले आए।

पिछले सात साल बच्चे की दिव्यांगता को देखते हुए किस तरह काटे और कैसी पीड़ा झेली इसका वे शब्दों में बयां नहीं कर सकते। ज्यों–ज्यों बच्चा बड़ा होता गया उसका दुःख भी बड़ा होता गया। सन् 2020 में उन्होंने नारायण सेवा संस्थान का निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने का टी.वी. पर कार्यक्रम देखा था। जो उन्हें उम्मीद की एक किरण जैसा लगा।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि दीपक को लेकर उसके परिजन संस्थान में आए थे। तब कृत्रिम पैर लगाया गया। उम्र के साथ लम्बाई बढ़ने पर कृत्रिम पांव थोड़ा छोटा पड़ गया। जिसे बदलवाने हेतु शुक्रवार को दीपक अपने मामा के साथ आया। उसे कृत्रिम अंग निर्माण शाखा प्रभारी डॉ. मानस रंजन साहू ने उसके नाप का कृत्रिम पांव बनाकर पहनाया। वह अब खड़ा होकर चल सकता है।

निशा को मिला नया सवेरा

बेतिया (बिहार) की रहने वाली निशा कुमारी (15) का बांया पैर जन्म से ही वि.त अर्थात् छोटा था। पैरो के इस असंतुलन को देख पिता चान्देश्वर शाह व माता चंदादेवी सहित पूरा परिवार चिंतित रहा। किसी ने बताया कि थोड़ी बड़ी होने पर बच्ची का पांव स्वतः ठीक हो जाएगा, लेकिन ऐसा न होने पर माता–पिता की चिंता और अधिक बढ़ गई। अस्पताल में दिखाने पर ऑपरेशन का काफी खर्च बताया। जो इनकी गरीबी के चलते नामुमकिन था।

पिता बाजार में सब्जी का विक्रय करते हैं, एवं माता–पिता खेतीहर मजदूर है। निशा के दो भाई और और दो बहनें हैं। कुल मिलाकर परिवार में सात सदस्य हैं, जिनका पोषण माता–पिता की कमाई से बामुश्किल हो पाता है। कुछ ही समय पूर्व दिल्ली में रहने वाले इनके करीबी रिश्तेदार भूषण शाह ने टीवी पर नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क पोलियो सुधार ऑपरेशन एवं कृत्रिम अंग वितरण के बारे में कार्यक्रम देखा तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने तत्काल निशा के पिता को सूचित किया।

बिना समय गंवाए संस्थान चान्देश्वर और उनके साढ़ू वासुदेव शाह जुलाई के पहले सप्ताह में ही निशा को लेकर उदयपुर संस्थान मुख्यालय पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसकी जांच कर 'एक्सटेंशन प्रोस्थेटिक' (कृत्रिम अंग) लगाया।

इसके लगने से निशा के दोनों पांवों में संतुलन है और वह बिना सहारे चल सकती है। निशा के भविष्य के प्रति चिंतित पूरा परिवार अब प्रसन्न है।

जन्म–जन्म के रिश्तों की डोर में बंधे 21 जोड़े

वैक्सीन–मास्क जरुरी संदेश के साथ लिए सात फेरे

नारायण सेवा संस्थान में 36वां दिव्यांग व निर्धन जोड़ों का विवाह

जीवनभर के लिए रिश्तों की डोर बंधी तो मन बार–बार हर्षित हुआ। यादगार लम्हों का साक्षी बना अपनों का दुलार। जिसने जीवन के हर दर्द को भुला दिया। उमंगों से परिपूर्ण दिव्य वातावरण में दिव्यांगता और गरीबी का दंश पीछे छूट अतीत में खो गया और नए जीवनसाथी के साथ जीवन की नई राहों में दस्तक दी। यह मंजर शनिवार को नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा में नजर आया। अवसर था संस्थान के 36वें दिव्यांग व निर्धन निःशुल्क सामूहिक विवाह समारोह का। जिसमें 21 जोड़ों ने पवित्र अग्नि के सात फेरे लेकर आजन्म एक–दूसरे का साथ निभाने का वचन लिया। विवाह समारोह के माध्यम से समाज को 'वैक्सीन–मास्क जरूरी' का सन्देश भी दिया गया। कोरोना महामारी के चलते आयोजन सम्बन्धी कार्यक्रम स्थल पर मास्क, सोशल डिस्टेंसिग और स्वच्छता सम्बन्धी सभी मानकों का पालन किया गया। प्रत्येक जोड़े के वैक्सीन पहले ही लग चुकी थी।

संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी 'मानव' व सहसंस्थापिका कमला देवी जी अग्रवाल के आशीर्वचन एवं संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल व निदेशक वंदना जी अग्रवाल द्वारा प्रथम पूज्य गणपति आह्वान के साथ विवाह समारोह शुभ मुहूर्त में प्रातः 10 बजे आरम्भ हुआ। दूल्हों ने तोरण की रस्म अदा की। सजे–धजे जोड़ों को मंच पर दो–दो गज की दूरी पर बिठाया गया। जहां वरमाला की रस्म अदा हुई। माता–पिता एवं अतिथियों ने आशीर्वाद प्रदान किया।

इससे पूर्व जोड़ों के मेहन्दी की रस्म वंदना जी अग्रवाल व पलक जी अग्रवाल के निर्देशन में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि इस विवाह समारोह के माध्यम से संस्थान पिछले 20 वर्षों से 'दहेज को कहें ना' अभियान की सार्थक अभिव्यक्ति भी कर रहा है। संस्थान के इस प्रयास को समाज ने सराहा है। संस्थान के सामूहिक विवाहों में इससे पूर्व 2109 जोड़े विवाह सूत्र में बंधकर खुशहाल और समृद्ध जीवन जी रहे हैं। इनमें से अधिकांश वे हैं, जिनकी दिव्यांगता सुधार सर्जरी संस्थान में ही निःशुल्क हुई और आत्मनिर्भरता की दृष्टि से संस्थान में ही इन्होंने निःशुल्क रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण प्राप्त किए। संस्थान दिव्यांगों के लिए कृत्रिम अंग निःशुल्क लगाने एवं उनकी शिक्षा व प्रतिभा विकास के लिए डिजिटल शिक्षा व स्किल डवलपमेंट की कक्षाएं भी निःशुल्क चला रहा है ताकि दिव्यांग सशक्त एवं स्वावलम्बी बन सकें। अग्रवाल जी ने निर्माणाधीन 'वर्ल्ड ऑफ ह्यूमिनिटी' परिसर एवं अगले पांच वर्षों के विजन डॉक्यूमेंट की भी जानकारी दी। विवाह समारोह में 6 राज्यों छत्तीसगढ़, पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व बिहार के जोड़े शामिल थे। समारोह का संचालन महिम जी जैन ने किया।

21 वेदियां : आचार्यों ने 21 अलग–अलग वेदियों पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सभी 21 जोड़ों का पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न करवाया। इस दौरान उनके माता–पिता भी मौजूद थे।

ऐसे भी जोड़े : विवाह समारोह में ऐसे भी जोड़े थे जो दोनों ही दिव्यांग थे अथवा उनमें से कोई एक दिव्यांग तो दूसरा सकलांग था। विवाह से पूर्व इन्होंने परस्पर मिलकर एक–दूसरे के साथ जीवन बिताने का निश्चय किया।

उपहार : प्रत्येक जोड़े को संस्थान की ओर से गृहस्थी के लिए आवश्यक सामान के रूप में बर्तन, सिलाई मशीन, बिस्तर, पलंग, गैस चूल्हा, घड़ी, पंखा आदि के साथ दूल्हन को मंगलसूत्र, चांदी की पायल, बिछिया, अंगूठी, साड़ियां, प्रसाधन सामग्री व दूल्हे को पेंट शर्ट, सूट आदि प्रदान किए गए। अतिथियों व धर्म माता–पिताओं ने भी उन्हें उपहार प्रदान किए।

विदाई की वेला : सामूहिक विवाह सम्पन्न होने के बाद विदाई की वेला के क्षण काफी भावुक थे। बाहर से आए अतिथियों व धर्म माता–पिताओं की आंखें छलछला उठी। उन्होंने तथा ट्रस्टी निदेशक जगदीश जी आर्य व देवेन्द्र जी चौबीसा ने जोड़ों को खुशहाल जिंदगी बिताने और आंगन में जल्दी ही किलकारी का आशीर्वाद दिया। संस्थान के वाहनों द्वारा उन्हें उपहारों व गृहस्थी के सामान के साथ उनके शहर–गांव के लिए विदा किया गया।

दिव्यांग को समान व्यवहार की अपेक्षा

'जीवन में अनेक मुकाम ऐसे आते हैं, जब व्यक्ति के सम्मुख कोई न कोई कठिनाई आती है और वह यदि अपने विवेक से उसे हल कर लेता है तो वह उसके लिए एक सबक की तरह सफलता के नए द्वार खोल देता है।'

यह कहना है उदयपुर के आदिवासी बहुल क्षेत्र के रोशनलाल का। नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में आयोजित 36वें दिव्यांग एवं निर्धन युवक–युवती निःशुल्क विवाह समारोह में रोशनलाल भी उन 21 युवकों में शामिल थे, जो विवाह सूत्र में बंधे। रोशनलाल का कहना था कि नारायण सेवा संस्थान ने मेरी तरह अनगिनत दिव्यांगों के जीवन को सार्थक दिशा प्रदान की है। मैं संस्थान की मदद से ही रीट परीक्षा की तैयारी कर रहा हूं। इस परीक्षा की तैयारी से सम्बन्धित कक्षाओं का निःशुल्क प्रबन्ध एवं कौशल प्रशिक्षण संस्थान ने ही संभव बनाया। मुझे पूरा यकीन है कि मैं एक सफल शिक्षक के रूप में समाज की सेवा में अपनी सार्थक भूमिका सुनिश्चित करूंगा।

मध्यप्रदेश निवासी 24 वर्षीय दिव्यांग संत कुमारी ने भी सामूहिक विवाह समारोह में गुजरात के मनोज कुमार के साथ पवित्र अग्नि के सात फेरे लिए, जो स्वयं भी दिव्यांग है। संत कुमारी का कहना था कि 'हर दिव्यांग यही चाहता है कि समाज उसके साथ समान और न्यायपूर्ण व्यवहार करे। संस्थान ने उसे कम्प्यूटर प्रशिक्षण देकर इस योग्य बना दिया है कि वह स्वयं अपना स्टार्टअप कर सकती है। दोनो पति–पत्नी एक दूसरे का सहारा बनकर जीवन को मधुरता के साथ व्यतीत करेंगे।

प्रतापगढ़ (राज.) के जन्मजात प्रज्ञाचक्षु नाथुराम मीणा दिव्यांग कंचन देवी के साथ विवाह सूत्र में बंधे। कंचन ने साथ फेरे लेने के बाद कहा कि 'मैं उनकी आंखें बनूंगी और वो मेरे बढ़ते कदम'।

सम्पादकीय

समता को अनेक महापुरुषों ने जीवन के उत्थान का प्रमुख गुण माना है। वस्तुतः समता केवल एक गुण नहीं है वरन् स्वयं गुण होते हुए अनेक गुणों का प्राकट्य करने वाला महागुण भी है। समता भाव जिस व्यक्ति में विकसित हो जाता है वह स्वतः ही अनेक कमियों पर विजय पाने लगता है। समत्व प्राप्त व्यक्ति सभी मनुष्यों को ईश्वर अंश या संतान मानते हुए उन्हें समानता का दर्जा देता है। समत्ववादी हरेक में गुणदर्शन ही करता है क्योंकि परमात्मा द्वारा रचित हर कृति में वह परमात्मा की ही छवि देखता है।

समता से ममता का भी संतुलन होने लगता है। ममत्व भाव में एकांगी दृष्टि हो सकती है पर जब ममता पर समता की छाप लग जाती है तो वह दोषमुक्त हो जाती है। समता से क्षमता भी विकसित होती है। क्षमतावान होने से समता पुष्ट ही होगी। अतः अनेक सद्गुणों का मूल मंत्र समता है।

कुछ काव्यमय

स्वास्थ्य का संसार है, स्वास्थ्य का व्यवहार।
जिस दिन मनवा जान ले, उस दिन बेड़ा पार॥
परमार्थ करते रहो, स्वास्थ्य भी दब जाय।
भूल चूक व्यापे नहीं, इसमें ना दो राय॥
स्व - पर यही तो भेद है, जिससे हो पहचान।
स्वहित तो सब ही जीये, परहित वो इंसान।
दीन दुखी की वेदना, जिस उर में रम जाय।
विधि की ये नियमावली, वो मानव कहलाय॥
अंतरतम झकझोरता, क्यों दुखिया संसार।
क्यों कोई वंचित रहे, पाने प्रभु का प्यार॥

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

पल-पल का सदुपयोग

जब हम अपनी उम्र के बारें में सोचें तो ये ध्यान रखें कि हमने कितना समय सदाचार, परमात्मा, के ध्यान, धर्म–कर्म के काम में व्यतीत किया है, क्योंकि कायदे से वही हमारी सही उम्र का पैमाना है।

मनुष्य को अपनी उम्र के पल–पल का सही उपयोग करना चाहिए क्योंकि मानव जीवन दुर्लभ है। इसे सार्थक बनाएं और पीछे छोड़ जाएं अपनी यादगार है। हमारी जो उम्र है, उसमें से ज्यादातर समय तो मनुष्य व्यर्थ की बातों में बर्बाद कर देता ह। इस सम्बन्ध में मुझे एक कथा प्रसंग का स्मरण भी आ रहा है। गौतम बुद्ध के एक शिष्य थे।

वे बुद्ध के साथ ही रहते थे। स्वभाव से बहुत ही भोले–भाले थे। एक दिन बुद्ध ने सोचा कि चलो आज इस वृद्ध के और सरलमना इंसान से कुछ गहरी बातें करते हैं। बुद्ध ने उस बूढ़े

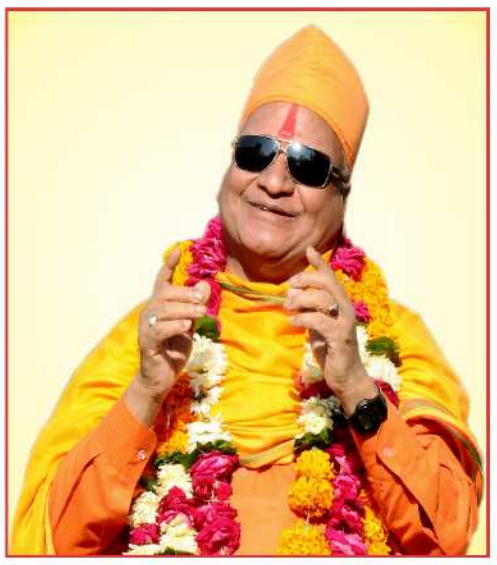

शिष्य से पूछा, 'क्या आयु होगी आपकी?' शिष्य ने उत्तर दिया, 'यही कोई 70 साल।' बुद्ध मुस्कराए और कहा, 'नहीं आप सही उम्र नहीं बता रहे है।' ये सुनकर शिष्य परेशान हो गया। वह जानता था कि बुद्ध बिना किसी वजह से एक भी शब्द नहीं कहते हैं। और, यदि बुद्ध कह रहे है तो जरूर कोई बात होगी। उसने फिर बुद्ध से कहा, 'मैं अपनी उम्र गलत नहीं बता रहा हूं।' देखिए, मेरे बाल श्वेत हो गए है, दांत गिर गए हैं। मैने पूरा जीवन जिस उम्र के हिसाब से बिताया है, वह यही है, लेकिन आपको क्या लगता है, मेरी उम्र क्या है?'' बुद्ध ने कहा, 'तुम्हारी उम्र एक वर्ष है।' यह बात सुनकर बूढ़ा शिष्य और अधिक परेशान हो गया। उसने कहा, 'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?'

बुद्ध बोले, 'सच तो यह है कि तुमने जो 69 साल दुनियाभर में व्यतीत किए है, वो बेकार हो गए। पिछले वर्ष से जब तुमने धर्म को खोजना शुरू किया, जब तुम ध्यान की ओर बढ़े, तभी से तुम्हें सही अर्थ में जन्म मिला। इसलिए तुम्हारी आयु एक वर्ष मानी जाएगी।' बन्धुओं! बुद्ध का इशारा है कि जब हम अपनी उम्र के बारे में सोचें तो ये ध्यान रखें कि हमने कितना समय सदाचार, परमात्मा के ध्यान और धर्म–कर्म में व्यतीत किया है। कायदे से वही समय हमारी सही उम्र है।

–कैलाश 'मानव'

सफलता की कसौटी

जब हम कोई लक्ष्य तय करें तो पहले उसके बारें में भली प्रकार सोच लें। जब निर्णय कर लें, तब हमारा पूरा ध्यान लक्ष्य की पूर्ती पर ही रहना चाहिए। जीवन के किसी क्षेत्र में सफलता की यही कसौटी है।

एक युवक का सपना था कि वह हिमालय की किसी चोटी पर चढे। एक दिन वह इसे साकार करने के लिए हिमालय की तलहटी तक पहुंच गया और आगे बढ़ने लगा। वह नजर ऊपर उठाता और फिर आगे बढता, लेकिन कुछ ही देर में उसकी हिम्मत टूटने लगती। उसे लगता कि वह सपना पूरा नहीं कर पाएगा। तभी उधर से गुजरता एक वृद्ध गडरिया दिखाई दिया। वह उसके पास

गया और बोला कि मैं हिमालय की चोटी पर चढ़ना चाहता हूं। लेकिन थोड़ा–सा चलने पर ही थक जाता हूं। मेरा मार्गदर्शन कीजिए। तभी वृद्ध मुस्कराया और बोला, 'तुम अभी से हार इसलिए मान रहे हो कि तुम हिमालय की ऊंचाई पर नजर डालकर बार–बार यही सोचते हो कि बहुत ज्यादा ऊंचाई पर जाना है, कब तक पहुंचुंगा और न जाने कितनी परेशानियां आएंगी। जब तक तुम्हारा ध्यान इन बातों पर रहेगा, तुम अपने सपने से दूर ही रहोगे। तुम्हें अपने हर बढ़ते कदम पर ही ध्यान देना है।' युवक की समझ में आ गया कि वह कहां गलती कर रहा था। अब उसमें हिम्मत और जोश भर गया। वह अपने कदम बढ़ाने पर ही ध्यान केंद्रित करने लगा और परिणाम यह हुआ कि वो हिमालय की चोटी पर पहुंच गया। मित्रों! इस प्रसंग का यही अर्थ है कि जब हम कोई लक्ष्य तय करें तो पहले से उसके बारे में भी प्रकार सोच लें। जब निर्णय कर लें, तब आपका पूरा ध्यान लक्ष्य की पूर्ति पर ही रहना चाहिए। गुरू द्रोणाचार्य ले जब तीरंदाजी प्रशिक्षण के दौरान अपने शिष्यों की परीक्षा ली, तो लक्ष्य पेड़ पर बैठी चिड़िया की आंख थी। लेकिन उस पर ध्यान केवल अर्जुन का ही गया। जबकि अन्य शिष्यों का ध्यान डालियों के घने पत्तों के बीच बैठी चिड़िया पर था। लक्ष्य स्पष्ट नहीं होने पर वे सफल नहीं हो पाए। जबकि अर्जुन अपन लक्ष्य सिर्फ चिड़िया की आंख को बताकर परीक्षा में सफल हो गया। इन प्रसंगो से स्पस्ट हो जाता है कि बिना लक्ष्य तय किए किसी भी क्षेत्र में सफलता सम्भव नहीं है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

अब तक पर्याप्त आटा एकत्र हो चुका था। अगले दिन इनकी रोटियां बनाकर अस्पताल ले जाना था। रात को 12 बजे के लगभग कैलाश उठा व बाकी सबको भी उठाया। उसने एक परात ली। सबसे पहले तो अपने घर से ही 4–5 किलो आटा निकाला और परात में डाला, इसके पश्चात् अन्य घरों से एकत्र किया तीन दिन का आटा भी उसमें डाला। समूचे आटे को छान कर, उसमें थोड़ा सा नमक मिलाया व कपड़े से ढक कर एक तरफ रख दिया। पानी की बाल्टी भी उसके पास रख दी। कमला को बोला कि सुबह 4 बजे उठकर इनके फुलके तथा कढ़ी बना लेंगे। इसके बाद सब सो गये।

सुबह 4 बजे के आसपास कमला ने सबको जगा दिया। कैलाश ने आटा ओसणा व लोये किये, कमला उन्हें बेलकर फुलके सेकने लगी। कल्पना व प्रशान्त भी उठ गये थे, दोनों भी मदद में जुट गये। इस बीच आस–पड़ोस के लोग भी हाथ बंटाने आ गये। इन्हें रात को ही सुबह जल्दी आने को कह दिया था। सुबह 6 बजे तक 150 के लगभग रोटियां बन गई। कढ़ी अलग से पका ली थी।

रविवार का दिन था, आर.एल.गुप्ता के पास भी साईकिल थी। कढ़ी की देगची तो एक साईकिल के आगे बांध दी तथा दो पीपों में रोटियां भर कर दोनों साईकिलों के पीछे बांध दिये और निकल पड़े भूखे लोगों की तलाश में। सबसे पहले तो आसपास ही देखा कि कहीं कोई भूखा, वंचित तो नहीं। पास ही गाडोलिया लौहार डेरा डाले थे। इनमें एक अपाहिज और एक अन्धा नजर आया तो उन्हें रोटियां और कढ़ी दे दी। यहां अन्य कोई नजर नहीं आया तो वे आगे बढ़े। पुराने रेलवे स्टेशन पर एक व्यक्ति चबूतरे पर बैठा नजर आया। उसने पांव नीचे लटका रखे थे और पांवों पर एक अच्छा सा शॉल पड़ा था। कैलाश को चेहरे से तो यह व्यक्ति भूखा लगा मगर शॉल देखकर लगा कि यह सम्पन्न होगा। किसी से यह पूछना कि क्या वह भूखा है, बहुत जोखिम भरा कार्य था। भूखा नहीं हो, खाता–पीता हो तो यह पूछना ही उसका अपमान करने जैसा हो जाता है। इस व्यक्ति को देखकर कैलाश को ऐसा ही डर लग रहा था, कहीं डपट कर यह न कह दे कि –भिखारी समझा है क्या?

अंश - 118

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ये समाज है भाई, समाज अच्छा ही है। पर समाज हर तरह का है। समाज में मुंडे – मुंडे मति : भिन्ना। हर आदमी अलग। सबसे ज्यादा थोक में मुत में तो सलाह मिलती है। सलाह की भी कदर है। तो मैं आपको कह रहा था, शब्द, स्पर्श। तो रूप हो गया। किसका विषय हो गया बेटा ? आँखों का विषय। और रस, रस जिह्वा का विषय हो गया। जो भोजन करते हैं नौ हजार कलिकाएं हमारी रस लेती है। ये बहुत अच्छा है, ये बहुत स्वादिष्ट है। ऐसा तो पहले कभी स्वादिष्ट भोजन नहीं देखा। अरे आमरस बहुत अच्छा है आमरस तीन कटोरी जीम गये। और हमारे राजमल जी भाईसाहब फर्स्ट टाईम मिला 1976 में, हरजी, हरजी नाम का गाँव जालोर जिले में, बाड़मेर जिले में भी है। भोजन करने बैठे उनके बड़े श्रद्धालु ने भोजन कराया। मैं भी उनके साथ था , मैरे को भी कराया। उन्होंने आमरस की कटोरी बाहर निकाल कर रख दी। मैं चकित हो गया ! मैंने तो दो कटोरी जीमी भाई। पण भोजन के बाद मैंने उनको पूछा – भाईसाहब आपको आमरस पसन्द नहीं है क्या ? इस सीजन का पहले आम था हाफुज आम का रस था। आपने कटोरी बाहर क्यों रख दी ? बोले – कैलाश जी, मुझे तो सबसे ज्यादा पसन्द ही आमरस है। फिर मैंने कहा – फिर आपने जीमा क्यों नहीं ? फिर चकित होने की बारी मेरी थी। उन्होंने कहा – कैलाश जी, ऐसी चीज का त्याग करना चाहिये जो उसके लालच में हम नहीं पड़ जावें। जिसके विषय– वासना में हम नहीं पड़ जावे। जो हमे विकारों में नहीं बांध दे। तो मैंरे मन में आया था कि मैं अपनी प्रिय वस्तु का त्याग कर दूं। तो आमरस सबसे प्रिय था तो मैंने दो साल पहले छोड़ दिया कि मैं जीवन भर आमरस नहीं लूंगा। ये है त्याग।

नाखून चबाने से कई रोगों की आशंका होती

कुछ लोग तनाव की स्थिति में नाखून चबाते दिखाई देते है। विशेषज्ञ अक्सर इस आदत को छोड़ने की सलाह देते है, क्योंकि नाखूनों में जमी गंदगी मुंह के जरिए पेट में जाकर संक्रमण करतीहै। कुछ मामलों में ओरल हाइजीन को खराब कर दांतों के इनेमल को भी नुकसान पहुंचाने लगती है। इसके दुष्प्रभाव से दांत सेंसिटीव होने लगते है। हेपेटाइटिस भी हो सकता हैं, नाखून चबाने से पानी जनित रोगों की आशंका बढ़ जाती है जैसे टायफायड, हेपेटाइटिस, पेट में संक्रमण आदि।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

श्राद्ध पक्ष में गया जी की पावन धरा पर अपने दिवंगत पितरों की सदगती एवं आत्मशांति हेतु कराये तर्पण

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

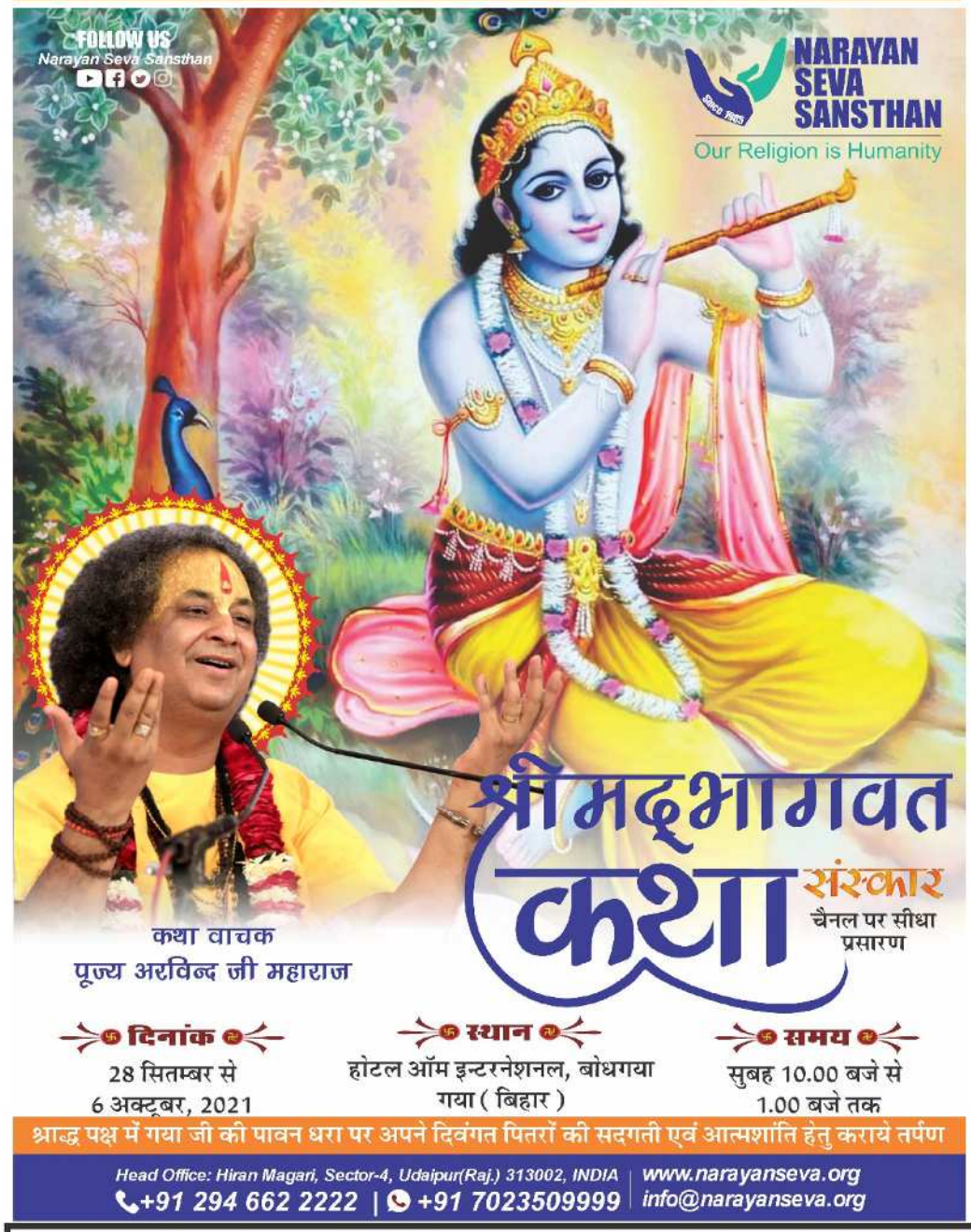

श्राद्ध पक्ष में गया जी की पावन धरा पर अपने दिवंगत पितरों की सदगती एवं आत्मशांति हेतु कराये तर्पण

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

अनुभव अमृतम्

ताला तोड़ा, देखा अन्दर उटपटांग सामान पड़ा है। हाँ, अस्त–व्यस्त है, कोई स्टोर रजिस्टर में नोट नहीं। पोस्टमास्टर साहब पास में खड़े हैं, डर रहे हैं, डांट पड़ रही है। अद्भुत जीवन और जूनीयर एकाउन्ट्स ऑफिसर रिजल्ट आया दो महिने में पास। पास हो गया कैलाश क्वालीफाईड, क्वालीफाईड परीक्षा पास कर ली। अब फर्स्ट, पार्ट सैकण्ड देखेंगे। छः साल में कभी भी कर सकते हैं पार्ट सैकण्ड। ऐसे भी सालभर बाद होगा। इसी बीच लगन लग गई। इन्सपेक्टर ऑफ पोस्ट आफिसेज की परीक्षा देने की आई.पी.ओ.। अरे! भाई जूनीयर एकाउन्ट्स ऑफिसर कर दिया, तेने दे दिया तो आई. पी. ओ. क्यों दे रहा है? अरे, इच्छा है तो इच्छा है। ये इच्छा, ये चित्तधारा, ये धारा, ये देहधारा। अपने हाथ की बात है, आपो आप ही निरंजन होय। ये जो भी संवेदना चल रही है, अपने आप चल रही है। आपो आप ही निरंजन होये। थोप्या ना जाय, कोई व्यवधान मत करो– भाई। नया थोपिये मत, स्थापना मत करिये। अपना मत लगाईये। पार ब्रह्म, परमात्मा की परम् कृपा से खूब आनन्द, खूब आनन्द। पूरणमलजी साहब ने भी जूनीयर एकाउन्ट्स ऑफिसर की परीक्षा दी। वो भी पास हो हुए। आदरणीय सुरेशचन्द्रजी जैन साहब, पोस्ट मास्टर साहब पोस्ट ऑफिस के। एक आदरणीय भट्ट साहब बी.बाबू, एक भैया बी.बाबू, बी. अर्थात् कार्मिक विभाग। डिसिप्लीन एक्शन, अटेंडेस, कौन कार्यकर्त्ता कहाँ है? ट्रांसफर, रेक्रूरमेंट। हाँ, रात को नौ–नौ बजे तक बैठता।

अब सौंप दिया इस जीवन का,
सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में,
और हार तुम्हारे हाथों में।।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 245 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023